Page No.:
Date:
YOUVA

-: भक्ति आन्दोलन :-

→ प्रारम्भ → 07 से 12वीं शताब्दी के बीच दक्षिण भारत में हुआ।

→ दक्षिण भारत के तमिल क्षेत्र में नयनार तथा अलवार संतो ने भक्ति आंदोलन का नेतृत्व किया।

1. नयनार संत →
→ 63 शैव संत हुए।

→ प्रमुख संत –
(1) अप्पार
(2) सुन्दरार
(3) संबदरार
(4) माणिककवसागर

✓ → एकमात्र महिला नयनार संत → "कराईक्काल"

→ "तवरम्" (ग्रंथ) → सुंदरार तथा संबदरार की कविताएँ

2. अलवार संत →
→ 12 वैष्णव संत हुए।

→ प्रमुख संत –
(1) पेरियअलवार
(2) आंडाल
(3) नामालवार

✓ → एकमात्र महिला अलवार संत → "आंडाल"

→ "आंडाल" पेरियअलवार की पुत्री थी।

→ आंडाल को "दक्षिण की मीरा" कहा जाता है।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ आंडाल की रचना → "थिरुपवाई"

→ "नलमिरादिव्यप्रबंधम्" → 12 अलवार संतो की काव्य रचनाओं का संकलन
- इसे "तमिल वेद" कहा जाता है।

3. वीरशैव / लिंगायत →
→ "वासन्ना प्रभू" द्वारा वीरशैव / लिंगायत सम्प्रदाय प्रारम्भ किया गया।

→ ये अपने बाजू पर शिवलिंग धारण करते है तथा शवो को दफनाते है

4. आदिगुरु शंकराचार्य →
→ इन्हे भक्ति आंदोलन का प्रथम प्रचारक माना जाता है।

→ जन्म → कलादि (केरल)

→ शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का सिद्धांत दिया तथा ब्रह्म ज्ञान को मुक्ति का साधन बताया।

→ शंकराचार्य ने "मायावाद" का सिद्धांत दिया।

→ शंकराचार्य ने बादरायण के ऋषि के ब्रह्मसूत्र पर "शारीरिक भाष्य" लिखा।

→ शंकराचार्य ने हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए चारो दिशाओ मे 04 पीठो की स्थापना की —
(1) ज्योतिष पीठ (बद्रीनाथ, उत्तराखंड) (उत्तर मे)
(2) शृंगेरी पीठ (मैसूर, कर्नाटक) (दक्षिण में)
(3) गोवर्धन पीठ (पुरी, उड़ीसा) (पूर्व में)
(4) शारदा पीठ (द्वारका, गुजरात) (पश्चिम में)

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

5. रामानुजाचार्य →
→ जन्म → पेराम्बदूर (तमिलनाडू)
→ गुरु → यमुनाचार्य
→ रामानुजाचार्य ने शंकराचार्य के मायावाद की आलोचना की।
→ रामानुज प्रथम संत हैं जिन्होंने भक्ति को मुक्ति का साधन बताया।
→ रामानुजाचार्य ने तिरुपति (बालाजी - गोविंदराज) की मूर्ति स्थापित की।
→ रामानुजाचार्य ने "विशिष्टाद्वैतवाद" का सिद्धांत दिया तथा ब्रह्मसूत्र पर "श्रीभाष्य" लिखा।

6. निम्बार्काचार्य →
→ सिद्धान्त → द्वैताद्वैतवाद
→ इसे "भेदाभेद" या "सनक" या "हंस" सम्प्रदाय भी कहते हैं।
→ ग्रंथ → वेदांत पारिजात
→ इसमे कृष्ण और राधा की एक साथ पूजा होती है।
→ राजस्थान में निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रधान पीठ → सलेमाबाद (Ajmer)

7. मध्वाचार्य →
→ सिद्धांत → द्वैतवाद
→ मध्व के विचारों का प्रचार गौड स्वामी द्वारा किए जाने के कारण इसे गौडिय सम्प्रदाय भी कहा जाता है।
→ चैतन्य महाप्रभू इसी सम्प्रदाय के थे।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

8. चैतन्य महाप्रभू →
→ अन्य नाम → निमाई पंडित, विश्वम्भर, गौरांग महाप्रभू (गौर कृष्ण)

→ चैतन्य ने संगीत तथा वृत्य को आराधना को मुक्ति का मार्ग बताया।

→ चैतन्य ने बंगाल मे वैष्णव पंत का प्रचार किया।

→ इनका मत "अचिन्त्य भेदाभेद" या "महागौड़िय सम्प्रदाय" कहलाता है।

9. शंकर देव →
→ इन्हे कूच बिहार (असम) के चैतन्य कहा जाता है।

→ इन्होने एकशरण सम्प्रदाय की स्थापना की।

10. वल्लभाचार्य →
→ जन्म → वाराणसी

→ ये कृष्णदेव राय के समकालीन थे।

→ मत/सिद्धांत → शुद्धाद्वैतवाद

→ भेद → अणुभाष्य

→ वल्लभाचार्य के पुत्र "विठलनाथ" को अकबर ने गोकुल व जैतपुरा की जागीरे दी।

→ विठलनाथ ने "अष्टछाप कविमंडल" की स्थापना की जिसके प्रमुख सदस्य सूरदास थे।

→ सूरदास को "पुष्ठि मार्ग का जहाज" कहा जाता है।

→ वल्लभ मंदिरो मे दिन मे 08 बार पूजा होती है।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

Page No.: YOUVA
Date:

→ यहाँ कृष्ण के बालरूप (ठाकुर जी) की पूजा होती है।
(यहाँ मंदिर को हवेली व ईश्वर की कृपा को पुष्टि कहते है।)

→ राजस्थान में वल्लभसम्प्रदाय की प्रधान पीठ "नाथद्वारा" की स्थापना राजसिंह के समय हुई।

11. रामानंद जी →

→ जन्म → प्रयाग (इलाहबाद)

→ ये रामानुज सम्प्रदाय में दीक्षित थे।

→ रामानंद जी भक्ति आंदोलन को उत्तर भारत में लाए।

→ इन्होंने संस्कृत के स्थान पर हिन्दी में उपदेश दिए।

→ इनके अलग-अलग जातियों के 12 शिष्य थे — (प्रमुख शिष्य —)

(1) कबीर (जुलाहा)
(2) रैदास (चमार)
(3) धन्ना (जाट)
(4) पीपा (राजपूत)
(5) सैन (नाई)

→ रामानंद के शिष्यो को "अवधूत (जीवन्मुक्त)" कहा जाता था।

→ राजस्थान में रामानंदी सम्प्रदाय की प्रधान पीठ → गलताजी (जयपुर)

→ गलताजी को Monkey Valley तथा "उत्तर का तोताद्रि" कहा जाता है

→ गलता पीठ की स्थापना → कृष्णदास पयहारी ने की।

→ रामानंद की शिष्य परम्परा में राजस्थान मे "रामस्नेही सम्प्रदाय" की स्थापना "रामकिशन बिजयवर्गीय (रामचरण जी)" ने की।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ रामकिशन / रामचरण जी का जन्म → सोडा गाँव (टोंक)

→ सवाई प्रथ्वीसिंह II ने रामकिशन त्रिजयवर्गीय को मालपुरा (टोंक) का दीवान बनाया।

→ ~~स~~ रामस्नेही सम्प्रदाय की 04 पीठे हैं –
- (सा) → शाहपुरा (भीलवाड़ा)
- (रै) → रैण (नागौर)
- (सी) → सींथल (बीकानेर)
- (खे) → खेडापा (जोधपुर)

→ प्रमुख ग्रंथ → अर्णभ वाणी

→ सत्संग स्थल → राम द्वारे / राम चौकी

→ रामस्नेही सम्प्रदाय का सबसे बड़ा मेला → फूलडोल मेला (शाहपुरा) मे "रंग पंचमी (चैत्र शुक्ल पंचमी) को लगता है।

12. कबीर →

→ जन्म → 1398

→ कबीर "नीरू – नीमा" को वाराणसी के लहरतारा तालाब के किनारे मिले थे।

→ गुरू → रामानंद जी

→ कबीर अरबी शब्द है जिसका अर्थ है → "महान"

→ कबीर निर्गुण संत है।

→ कबीर की शिक्षाएँ बीजक में संकलित है। इसका संकलन धर्मदास ने किया।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ कबीर की मृत्यु → मगहर (उत्तरप्रदेश)

→ कबीर ने हिन्दू - मुस्लिम के समन्वय पर सर्वाधिक बल दिया।

→ कबीर की शिक्षाएँ → बीजक, रमैनी, सबद, साखी में सम्मिलित हैं

→ कबीर सिकंदर लोदी के समकालीन थें।

→ कबीर के अनुसार (उपदेश) → "सभी व्यक्ति जन्म से समान हैं।"

13. रैदास (रविदास) →

→ व्यवसाय → चमार

→ गुरु → रामानंद जी

→ कबीर ने रैदास को "संतो का संत" कहा।

→ रैदास "मीराबाई" तथा "चितौड़ की रानी शीला" के गुरु थें।

→ रैदास की छतरी → कुंभश्याम मंदिर (चितौड़)

14. मीरा बाई →

→ जन्म → 1498, कुड़की गाँव (पाली)

→ बचपन का नाम → पैमल

→ पति → भोजराज

→ गुरु → "रैदास" तथा "जीव गोस्वामी"

→ भक्ति भाव → माधुर्य

→ मत → दासी मत

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner

→ मीराबाई ने वृंदावन तथा द्वारका में कृष्ण भक्ति के पदों की रचना की

→ अंतिम समय → द्वारका के रणछोड़ मंदिर में बीता।

→ रचनाएँ →

(1) पदावलियां
(2) टीका राग गोविन्द
(3) नरसी मेहता नी हुंडी
(4) राग सोरठ के पद

→ रतना खाती ने ब्रज भाषा में "नरसी जी रो मायरो" की रचना की।

15. दादू दयाल (महाबली) →

→ प्रधान पीठ → भैराणा पहाड़ी, नरायणा (जयपुर)

→ सत्संग स्थल "अलख दरीबा" कहलाते है।

→ दादू को "राजस्थान का कबीर" कहा जाता है।

→ अकबर ने दादू को धार्मिक परिचर्चा के लिए "फतेहपुर सीकरी" के इबादत खाने में बुलाया।

→ दादू के 152 शिष्य थे जिनमें से 100 एकांतवासी तथा 52 स्तम्भ कहलाए।

→ ये 04 सम्प्रदायों में बंटे थे —

1. खाकी → (शरीर पर भस्म लगाते थे)
   → सुंदरदास के शिष्य

2. खालसा → गरीबदास (दादू के पुत्र)

3. विरक्त → (घुम-घुम कर प्रचार करने वाले)

Scanned by CamScanner
RC Choudhary - Mobile Apps

15. उत्तरादे / स्थानिक → (राजस्थान से उत्तर दिशा में प्रचार करने वाले)

16. सुंदरदास जी खण्डेलवाल →
→ जन्म → लालसोट (दौसा)

→ राजस्थान के सर्वाधिक पढ़े-लिखे संत

17. रज्जब जी पठान →
→ जन्म → सांगानेर

→ दादू के शिष्य

→ दादू से प्रभावित होकर विवाह नहीं किया किन्तु दुल्हा वेश मे रहें।

18. गुरुनानक जी →
→ जन्म → 1469 तलवंडी / ननकाना साहिब (पाकिस्तान)

→ उन्होने निर्गुण ईश्वर अकाल पुरुष की उपासना पर बल दिया।

→ प्रमुख शिष्य → मर्दाना

→ उन्होने महिला सशक्तिकरण पर सर्वाधिक बल दिया।

→ गुरुनानक का कथन, " आगामी दुनिया मे कोई जाति नही होगी)

⇒ महाराष्ट्र धर्म ⇒

→ प्रमुख महिला संत → सखू बाई

→ प्रमुख संत परिवार → चोखा मेला

HC Choudhary - Mobile Apps
Scanned by CamScanner

संत ज्ञानेश्वर →

1. → महाराष्ट्र में रहस्यवादी सुधार आंदोलन के प्रथम संत थे।

→ इन्होने मराठी में भागवत् गीता पर "ज्ञानेश्वरी टीका" लिखी।

संत नामदेव दर्जी →

2. → जन्म → पंढरपुर (महाराष्ट्र)

→ ये प्रारम्भ में डाकू थे।

→ इन्होने विठोबा खेचड़ नामक कनफड़े नाथ संत से रहस्यवादी दर्शन की दीक्षा ली।

→ ये इस्लाम से सर्वाधिक प्रभावित थे।

→ इन्होने मराठी में उपदेश दिए तथा वारकरी पंत की स्थापना की।

→ प्रमुख कथन, " एक पत्थर पूजा जाता है तथा दूसरा पैरो से रौंदा जाता है यदि पहले पत्थर में ईश्वर है तो दूसरे में भी ईश्वर है।"

(छुआछूत के विरोध में कहा)

HC Choudhary - Mobile Apps

संत तुकाराम →

3. → ये शिवाजी के समकालीन थे।

→ ये वारकरी संत ही थे।

→ यह शूद्र जाति के थे।

→ उनकी शिक्षाएँ "अभंगो" के रूप में संकलित हैं।

समर्थ रामदास →

4. → इन्होने धरकरी पंत प्रारम्भ किया तथा मराठा जनता को राष्ट्रवाद के लिए प्रेरित किया।

Scanned by CamScanner

50

→ इन्होंने दासबोध ग्रंथ लिखा।

→ ये शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे।

50 संत एकनाथ →

→ जन्म → पैठण (औरंगाबाद)

→ इन्होंने भागवत गीता पर 04 श्लोकी टीका लिखी।

→ ये वारकरी संत थे।

HC Choudhary - Mobile Apps

Scanned by CamScanner